The Meaning of purity of the soul

शिविर की सार्थकता-शुद्धता की सच्ची समझ से

डॉ.पारसमल अग्रवाल

मैं एक दीन-हीन, पुण्य पाप की प्रसन्नता एवं पीढा को झेलने वाला एक संसारी प्राणी हूं। इस प्रकार के

कथनों को हम कई बार सुन चुके हैं, कई तरह से अनुभव कर चुके हैं व हजारों तरह से हम तर्क दे सकते हैं कि जीवन की यह एक सचाई है।

उज्जैन में २३ फरवरी १९९७ से आयोजित होने वाले शिविर में शिविरार्थी उक्त जीवन की सचाई से परे भी जो एक सौन्दर्यमयी सचाई है उसका पाठ पढने हेतु एकत्रित होने वाले हैं। आत्मा जिसे अशुद्ध कहा जा रहा है वह भी किसी अपेक्षा शुद्ध है। यदि शिविरार्थी जिस अपेक्षा में आत्मा शुद्ध है उसे अपेक्षा को समझ लें तो शिविर में भाग लेना सार्थक हो जायेगा। मात्र यह कहना कि निश्चय नय से आत्मा शुद्ध है, यह पर्याप्त नहीं है। निश्चय नय वाला विशेषण गौण करके वस्तु स्वरूप को पहले समझ लें व फिर उसकी खतौनी निश्चयनय में करें तो वस्तु स्वरूप भी समझ में आयेगा व निश्चय नय भी समझ में आयेगा। स्वर्णकार को २२ कैरेट के २४ ग्राम स्वर्णाभूषण में २२ ग्राम सोना भी ज्ञान में दिखाई दे रहा होता है व २ ग्राम तांबा भी ज्ञान में दिखाई दे रहा होता है। वह स्वर्णकार यह नहीं कहता है कि इस आभूषण में जो २२ ग्राम सोना है वह निश्चयनय से शुद्ध सोना है। वह स्वर्णकार तो निश्चयनय शब्द को भी नहीं जानता है परन्तु उसे स्वर्णाभूषण की समझ हो गई है कि वह अपने शिष्य पुत्र को यह बता सकता है कि कीमती माल २२ ग्राम है जिसे खरा सोना या शुद्ध सोना समझो। यदि उसका पुत्र २४ ग्राम वजन वाले स्वर्णाभूषण को ही सोना समझते हुए यह पूछे कि यह क्या गडबड है? सोना तो २४ ग्राम है व आप कहते है कि खरा सोना २२ ग्राम है। यह दो प्रकार का सोना कैसे। तब उसके उत्तर में पिता विस्तार से समझाता है जिसको संक्षेप में यों कहा जा सकता है कि २४ ग्राम सोना तब कहते हो वह व्यवहारनय से सोना कहा जाता है किन्तु सचाई तो यह है कि तांबे से पृथक जो धातु है वह २२ ग्राम है, वही निश्चयनय से सोना है या वही सोना वास्तव में होता है। शेष २ ग्राम तांबा तो सोने के साथ रहने से व्यवहार में सोना कहा जाता है। किन्तु वह सोना नहीं है। बात का मर्म पूरा समझने हेतु हम इसी उदाहरण को थोडा आगे बढाते हुए हम स्वर्ण से एक प्रश्न पूछते हैं-हे २४ ग्राम स्वर्णाभूषण में स्थित सोने तेरा वजन कितना है?

यदि इस प्रश्न का उत्तर सोना यह देता है कि **मेरा वजन वर्तमान में २४ ग्राम है किन्तु २ ग्राम मुझमें तांबा है** तो क्या इस उत्तर को स्वीकार कर लोंगे?

क्या आप सोने से यह उत्तर नहीं सुनना चाहोंगे कि **मेरा वजन तो वर्तमान में भी २२ ग्राम है। मेरे साथ २ ग्राम तांबा है किन्तु वह मैं नहीं हूं। लेन-देन में व मुझे पहनने वाला यह समझ रहा है कि उसने २४ ग्राम सोना पहन रखा है। जिस अपेक्षा से वह पहनने वाला २४ ग्राम समझ रहा है उस पर भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।**

आत्मा के साथ भी आचार्य ऐसा ही प्रश्न पूछते हैं व ऐसा ही उत्तर समझाते हैं जिससे आत्मा को यह भली भांति समझ में आ जाये कि जो आत्मा है वही आत्मा है। आत्मा से पृथक अन्य अनात्मा आत्मा नहीं हैं। इस तथ्य को बहुत ही सुन्दर शब्दों में आचार्य अमृतचन्द्र ने समयसार कलश क्रं.१८५ में इस प्रकार कहा है-

सिद्धान्तोऽयमुदात्त चित्तचरितैर्मोक्षार्थिभिः सेव्यतां
शुद्धं चिन्मयमेकमेव परमं ज्योतिः सदैवास्म्यहं।
एते ये तु समुल्लसंति विविधा भावाः पृथग्लक्षणा
स्तेऽहं नास्मि यतोऽय ते मम परद्रव्यं समग्रा अपि।।

इस कलश का भावार्थ बहुत ही प्रेरणास्पद है। आचार्य यह सीख दे रहे हैं कि मोक्षार्थि को इस सिद्धान्त का सेवन करना चाहिए कि मैं सदैव एक शुद्ध चैतन्य परम ज्योति हूं व मेरे से भिन्न लक्षण वाले जितने भाव (विकारी भाव क्रोधादि) प्रकट होते हैं वह मैं नहीं हूं।

अहिंसा भूमि फरवरी 1997

कम्प्यूटर क्रान्ति के सन्दर्भ में राग से भिन्न ज्ञायक आत्मा

-डा.पारसमल अग्रवाल

आचार्य भौतिक विज्ञान, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन

शरीर एवं जीव की भिन्नता समझना सरल है किन्तु इन्द्रिय ज्ञान से ज्ञायक की भिन्नता या राग-द्वेष क्रोध आदि से ज्ञायक की भिन्नता समझना बहुत कठिन है। इस प्रकार की भिन्नता को समझने हेतु आधुनिक युग के कम्प्यूटर के विकास के ज्ञान से एक नवीन तर्क मिल सकता है। इस लेख में इसी तथ्य के संकेत दिए जा रहे हैं।

जोड़, बाकी, गुणा, भाग आदि कार्य कम्प्यूटर से होते हुए हम देखते हैं। हम यह भी जानते हैं कि कम्प्यूटर निर्जीव है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि पहाड़े याद करने, गुणा-भाग करने जैसे दिमागी कार्य भी जीव के होना आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार इन्द्रियों के निमित्त से होने वाले कई प्रकार के ज्ञान कम्प्यूटर या मशीनों में संभव होते हुए हमें दिखाई देते हैं। इस तथ्य को यदि हम समझ लें तो हमें यह स्वीकारने में कठिनाई नहीं आयेगी कि इन्द्रिय ज्ञान एवं जीव तत्व भिन्न हो सकते हैं। इसके विपरीत यदि हम इन्द्रिय ज्ञान एवं जीव को अभिन्न मान लेंगे तो हम कम्प्यूटर को आश्चर्य की निगाहों से देखेंगे एवं जीव द्रव्य के अस्तित्व पर ही शंका कर सकते हैं। इन्द्रिय ज्ञान की जीव से भिन्नता पहचाना फिर भी सरल है किन्तु राग-द्वेष, क्रोध, मोह आदि से आत्मा की भिन्नता समझना और भी कठिन बात है। समयसार में स्थान-स्थान पर राग की आत्मा से भिन्नता दिखाई है। उदाहरण के लिए निम्नांकित गाथाएं देखी जा सकती हैं-

कुछ मोह वो मेरा नहीं, उपयोग केवल एक मैं।
इस ज्ञान को ज्ञायक समय के, मोह निर्ममता कहे॥ (38)

उपयोग में उपयोग, को उपयोग नहिं क्रोधादि में।
है क्रोध क्रोध विषैं हि निश्चय, क्रोध नहिं उपयोग में॥ (181)

कर ग्रहण प्रज्ञासे नियत, ज्ञाता है सो ही मैं हि हूं
अवशेष जो सब भाव हैं, मेरे से पर ही जानना॥ (299)

जिन्होंने इन गाथाओं का मर्म नहीं समझा है उन्हें अब विज्ञान की एक नवीन क्रान्ति से या तो धक्का लग सकता है या इन गाथाओं का मर्म समझ में आ सकता है। निकट भविष्य में ऐसे कम्प्यूटर चलित रोबोट बनने वाले हैं जिनकी याददाश्त मनुष्य के मस्तिष्क के मुकाबले की होगी वे न केवल मनुष्य का चेहरा एवं आवाज पहचान सकेंगे अपितु डाट-फटकार सुनकर रूदन भी कर बैठेंगे या वापस तीखे शब्दों से प्रतिकार करते हुए क्रोध भी प्रदर्शित कर सकेंगे। इसी तरह स्नेह के मनोभाव भी ऐसे कम्प्यूटर चलित रोबोट कर सकेंगे।

इस प्रकार के प्रयोगों को देखकर कुछ व्यक्ति कहेंगे कि मनुष्य भी एक तरह की मशीन मात्र है व दिमाग एक तरह का कम्प्यूटर है। यानी कुछ व्यक्ति जीव तत्व को पूर्णतया नकार सकते हैं। किन्तु समयसार की उक्त गाथाओं का मर्म समझने में रूचि रखने वालों को क्रोध से भिन्न ज्ञायक तत्व को स्वीकार करने में व समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी।

निर्जीव कम्प्यूटर का क्रोध ज्ञानी को बिल्कुल भी अचंभित नहीं करेगा। ज्ञानी जानता है कि हमारे समस्त क्रोध आदि भाव अचेतन द्रव्य के निमित्त से होने वाले भाव हैं व वह तो मात्र ज्ञाता या ज्ञायक है। इसके विपरीत अज्ञानी इन भावों को इसी तरह अपना मानता है जिस तरह अधिक अज्ञानी शरीर की क्रियाओं को भी अपनी क्रियाएं मानता है।